विराट नारी उत्कर्ष समारोह, उ.प्र.
उ.प्र. में एक करोड़ देव परिवार निर्माण का महान अभियान 3

असम और अरुणाचल प्रदेश में जन्मशताब्दी वर्ष की प्रखर चेतना का विस्तार 7

जन्मशताब्दी समारोह
हरिद्वार में आरंभ हो गई तैयारियाँ 8

शताब्दी वर्ष-2026

अखण्ड दीप शताब्दी वर्ष 1926 2026 शान्तिकुञ्ज हरिद्वार

परम वन्दनीया माता भगवती देवी शर्मा जन्म शताब्दी 1926 2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 दिसम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 11
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अक्टूबर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-15

सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

कोमल और सौम्य तत्वों को इशारे से समझाकर, विवेक एवं तर्क द्वारा सन्मार्गगामी बनाया जा सकता है, पर कठोर और दुष्ट तत्वों को बदलने के लिए लोहे को आग में तपाकर पिटाई करने वाली लोहार की नीति ही अपनानी पड़ती है। दुर्योधन को समझाने-बुझाने में जब श्रीकृष्ण सफल न हो सके, तब उसे अर्जुन के बाणों द्वारा सीधे रास्ते पर लाने का प्रबंध करना पड़ा। आज व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में ऐसी अनेक अवांछनीयताएँ घुस पड़ी हैं, जिन्हें निरस्त करने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रतिरोध आवश्यक हो जाता है।

गीता का रहस्यवाद अपने अंतरंग के शत्रुओं को कौरव मानकर अर्जुन रूपी जीव को उनसे लड़ मरने के लिए प्रोत्साहित करता है। जहाँ सद्गुणों के अभिवर्धन की निरंतर साधना करनी पड़ती है, वहीं अंतरंग में छिपे दोष-दुर्गुणों से भी जूझना पड़ता है। यदि आलस्य, आवेश, असंयम आदि दुर्गुणों के विरुद्ध कड़ा मोर्चा खड़ा न किया जाए तो सद्गुण पनप ही न सकेंगे। जिसने अपने दोष-दुर्गुणों से लड़कर विजय पाई, वही सच्चा विजेता है।

सामूहिक जीवन में अनाचार को रोकने के लिए पुलिस, जेल, अदालत, कानून की व्यवस्था है, पर लोक स्तर पर भी अवांछनीयता, उद्दंडता और दुष्टता का प्रतिरोध न किया जाए तो वह शालीनता और शांति को देखते-देखते निगल जाएगी।

इन दिनों समाज में छल, असत्य, बनावट और विश्वासघात का ऐसा प्रचलन हो गया है कि किसी व्यक्ति पर सहज ही विश्वास करना खतरे से खाली नहीं रहा। सामाजिक कुरीतियों का तो कहना ही क्या, विवाहोन्माद, मृत्यु-भोज, ऊँच-नीच, नारी तिरस्कार आदि न जाने कितनी प्रकार की कुरीतियाँ समाज में घुसी बैठी हैं। इस अनाचार के विरुद्ध आरंभ किए गए धर्म-युद्ध में भाग लेने के लिए हर व्यक्ति का आह्वान है। किसी समय तलवार चलाने वाले और सिर काटने में अग्रणी लोगों को योद्धा कहा जाता था, आज दुर्बुद्धि और कुत्सा से लड़ सकने में जो लोग समर्थ होंगे, उन्हीं का पुरुषार्थ पीड़ित मानवता को त्राण दे सकने का यश संचित कर सकेगा।

भारतीय समाज को बेईमान और गरीब बनने के लिए विवश करने वाले सत्यानाशी विवाहोन्माद नामक असुर से पूरी शक्ति के साथ जूझना पड़ेगा। पूर्ण सादगी और स्वल्प खर्च वाले विवाहों का प्रचलन होने तक अपना संघर्ष चलता रहेगा। मृतक भोज की घृणित दावतें, पशु बलि की नृशंसता, ऊँच-नीच के नाम पर मानवीय अधिकारों का अपहरण, नारी को पद-दलित और उत्पीड़ित करने की क्रूरता हमारे समाज पर लगे हुए ऐसे कलंक हैं, जिनका समर्थन कोई भी विवेकशील और सहृदय व्यक्ति कर ही नहीं सकता। इस मूढ़ता के विरुद्ध हमें सक्रिय कदम उठाने पड़ेंगे।

वैयक्तिक दोष-दुर्गुणों से लड़ने और जीवन को स्वच्छ, पवित्र, निर्मल बनाने के लिए अगर कुसंस्कारों से लड़ना पड़ता है, तो वह लड़ाई लड़ी ही जानी चाहिए। सब के लिए न्यायानुकूल अधिकार, लाभ, श्रम तथा सहयोग करने की व्यवस्था रहे। आर्थिक क्षेत्र में बेईमानी को प्रश्रय न मिले। व्यक्तिगत व्यवहार में छल करने और धोखेबाजी की गुंजाइश न रहे। ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करने के लिए प्रबल लोकमत तैयार करना पड़ेगा। हराम की कमाई खाने वाले, भ्रष्टाचारी, बेईमान लोगों के विरुद्ध इतनी तीव्र प्रतिक्रिया उठानी होगी, जिसके कारण उन्हें सड़क पर चलना और मुँह दिखाना कठिन हो जाए। .... (शेष पृष्ठ 2 पर)

गीता-उपदेश : परमात्मा को अपना मित्र बना लो

युगऋषि परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य (अखण्ड ज्योति, नवम्बर 1940)

'तेषामहं समुद्धर्ता मृत्यु संसार सागरात्'।
गीता 12/7

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं, ''जिनका चित्त मुझमें स्थिर है, जो मुझे अपने में देखते हैं, अपने साथ अनुभव करते हैं, मैं उन्हें जन्म-मृत्यु रूपी इस संसार सागर से बचा लेता हूँ।'' अब प्रश्न आता है कि क्या भगवान को अपना सच्चा मित्र बनाया जा सकता है? उत्तर है-हाँ। हमारे इस मित्र की शक्ति इतनी है कि हमें क्षण भर में प्राणान्तक कष्टों से बचा सकता है। उस परमात्मा को अपना मित्र न बनाना एक प्रकार से भयंकर हानि है।

मित्रता का मोल

हम लोग मित्रों की तलाश में रहते हैं। जिसके जितने अधिक मित्र होते हैं, वह उतना ही फूला-फूला रहता है, क्योंकि उसे साथियों से सहारा जो मिल जाता है। मित्र हमारी हँसी-खुशी को बढ़ाते हैं। 'शत्रु' शब्द की कल्पना करते ही हानि, कष्ट, क्लेश कलह की दुखदायी तस्वीर आँखों के सामने आ खड़ी होती है। हम सभी ऐसी परिस्थिति से घृणा करते हैं, इसीलिये मित्रों की तलाश में रहते हैं। जिसने किसी बड़े आदमी से, योग्य व्यक्ति से मैत्री कर ली, उसकी प्रसन्नता का तो ठिकाना ही नहीं रहता। खुद कुछ न भी होते हुए मित्र के बल पर वह फूला फिरता है। तात्पर्य यह है कि मनुष्य जीवन में सहायकों और मित्रों का स्थान बहुत ऊँचा है। यदि ये मित्र अपने शत्रु बन जाएँ, तो देखिए जीवन कैसा क्लेशमय बन जाता है। एक दार्शनिक के अनुसार संसार की समस्त संपत्तियों में से एक मित्र का मूल्य सबसे अधिक है।

परमात्मा से मित्रता

क्या तुम सच्चा मित्र चाहते हो? यदि चाहते हो तो तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति से मित्रता करनी चाहिए, जो चौबीसों घंटे का साथी हो। दूसरे मित्र तो कुछ घंटे तक ही साथ रह सकते हैं। फिर वे जो मदद कर सकते हैं, वह केवल शरीर और मन तक पहुँचती है। उन बेचारों की सहायता की शक्ति भी बहुत सीमित है। जब तुम दुःख-दर्द में होते हो, तो ये मित्र सान्त्वना देते हैं, सहानुभूति प्रकट करते हैं, पर उनसे कुछ विशेष लाभ प्राप्त नहीं होता। वे तुम्हारी व्याकुलता समाप्त नहीं कर सकते, क्योंकि उनकी सामर्थ्य बहुत कम है। जो श्रेष्ठ और अच्छे साथी मालूम पड़ते हैं, वे भी विपरीत परिस्थितियों में उपेक्षा का भाव धारण कर सकते हैं। यदि तुम्हें कोई छूत की बीमारी लग जाए, ऐसे समय में तो अच्छे मित्र या कुटुम्बी भी साथ छोड़ देते हैं।

एक मित्र ऐसा है, जो चौबीसों घंटे का साथी हो सकता है। सोते-जागते, उठते-

बैठते, खाते-पीते, सब जगह वह साथ रहता है। वह तुम्हारे अन्तःस्थल तक पहुँच सकता है। उसकी शक्ति साधारण मित्रों की अपेक्षा कई गुना अधिक है। वह मित्र है परमात्मा, जो सच्चाई की तरह सच्चा, प्रेम की तरह पवित्र और माँ की तरह ममतापूर्ण है। परमात्मा को हम भूले रहते हैं, लेकिन वह हमें कभी नहीं भूलता। जब भी हम प्रेम की दृष्टि से उसकी ओर देखते हैं, तो उसकी छाया को अपने अन्दर मुस्कुराता हुआ महसूस करते हैं।

परमात्मा से मित्रभाव कैसे बढ़ायें?

तुम परमात्मा को अपना मित्र बनाओ। हर घड़ी अपने को उसकी गोदी में बैठा हुआ अनुभव करो। यह मत सोचो कि वह मित्र अदृश्य है, शरीरधारी नहीं है, तो उससे मैत्री किस प्रकार की जा सकती है? जितना ही तुम उसे अपने निकट मानोगे, उतना निकट वह आता जाएगा। जिस प्रकार किसी सच्चे मित्र के सामने तुम अपनी समस्या रख देते हो, उससे सलाह माँगते हो, उसी प्रकार परमात्मा के सामने अपना हृदय खोल कर रख दो। अपनी उलझनें उसके सम्मुख उपस्थित करो और पूछो कि अब क्या करना चाहिये।

जैसे-जैसे इस मित्र से तुम अपनी मित्रता बढ़ाते जाओगे, अपने को उसके ऊपर छोड़ते जाओगे, वैसे-वैसे वह तुम्हें अपने प्रगाढ़ आलिंगन में लेता जाएगा। ऐसी स्थिति में तुम्हारे सारे दुःख-दर्द सुख और शांति में बदलते चले जाते हैं। तुम्हें उसके स्वर्गीय संदेश अपने अंदर से आते हुए सुनाई देने लगते हैं। जिन परिस्थितियों को देख कर साधारण आदमी घबरा जाता है, पीड़ा एवं व्याकुलता से छटपटाने लगता है, वैसी परिस्थितियों में परमात्मा पर विश्वास रखने वाला अचल रहता है। उसे ऐसा मालूम होता है मानो उसका हाथ पकड़ कर उसे कोई चला रहा है, दिशा दिखा रहा है। अन्तरात्मा के आदेशों का वह निर्णयपूर्वक पालन करता है। ऐसे में उसे जो कुछ भी प्रिय अथवा अप्रिय परिणाम मिलता है, उसे वह प्रभु का प्रसाद समझ कर सहर्ष शिरोधार्य करता है।

तुम उस परमात्मा को अपना सखा-चौबीस घण्टे का साथी बनाओ। अपने हृदय-मन्दिर में सदा उसकी मुस्कुराती हुई छाया को देखो। हर घड़ी अपने को उसी की गोद में सुरक्षित बैठा हुआ महसूस करो। एक शरीरधारी व्यक्ति की तरह उससे बातचीत करो। सम्पूर्ण शरीर को शिथिल करके अपनी अन्तरात्मा से आती हुई दैवीय वाणी को सुनो। वह तुम्हें हर मामले में-चूल्हा फूँकने से लेकर योगाभ्यास तक के कार्यों में सच्ची सलाह देगा, तुम्हारा पथ-प्रदर्शन करेगा। उसकी इच्छा को अपनी इच्छा बना लो। अपने चौबीस घण्टे के साथी पर अपना बोझ डाल कर निश्चिंत हो जाओ। तुम पार हो जाओगे, वह तुम्हें पार कर देगा। •

लक्ष्य हमारा-विचार क्रान्ति : सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार में हम उदासीन न रहें

लक्ष्य स्पष्ट और सुनिश्चित हो तथा अपनी सामर्थ्य का सही-सही बोध हो तो कार्यसिद्धि में सफलता की संभावनाएँ बहुत बढ़ जाती हैं। हनुमान जी इतने शक्तिशाली थे कि बचपन में ही उन्होंने सूर्यदेव को पका हुआ लाल फल समझ कर उसे खाने के लिए मुख में रख लिया था, जिससे धरती पर हाहाकार छा गया था। अपनी सामर्थ्य का विस्मरण हो जाने पर वही हनुमान जी सुग्रीव के साथ वन, कंदराओं में दर-दर भटकते रहे। जामवंत जी ने उन्हें उनकी सामर्थ्य का पुनर्बोध कराया, तब वे अपनी सामर्थ्य का सदुपयोग करने में हिचकिचाये नहीं। तब अकिंचन से वानर ने छलांग लगाकर 100 योजन समुद्र पार कर लिया और आवश्यकता पड़ने पर अति बलशाली रावण की लंका को अकेले ही तहस-नहस कर दिया।

हम सब भी बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हम परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के रूप में राम और कृष्ण जैसी अवतारी चेतना से जुड़े हैं। उनकी अहैतुकी कृपा से गायत्री परिवार के रीछ-वानर जैसे सामान्य से कार्यकर्त्ताओं ने अपने चरित्र, चिंतन, गुरुसत्ता के प्रति समर्पण और मानवता के उत्थान की, राष्ट्र के पुनर्निर्माण की प्रबल भावनाओं के बल पर बड़े-बड़े प्रभावशाली लोगों के जीवन को बदला है। जातिवाद के दंश से मुक्ति पाते हुए 'मानव मात्र एक समान-एक पिता की सब संतान' के उद्घोष को चरितार्थ किया है। वर्ग विशेष तक प्रतिबंधित 'गायत्री' और 'यज्ञ' को घर-घर पहुँचाया है।

ज्योति बुझने न दें

हमारे जन्म-जन्मांतरों के संचित सत्कर्मों के पुण्य से इस जन्म में यह सौभाग्य का सूर्योदय हुआ है, इसे पहचानने में हम भूल न करें। जब हम अपने जीवन में हुए परिवर्तन और प्राप्त सफलताओं को देखते हैं तो हमें गुरुदेव के दिव्य संरक्षण तथा अकूत अनुदानों की स्पष्ट अनुभूति होती है। लोग प्रायः गुरुकृपा से प्राप्त आशातीत सफलताओं का गुणगान करते सुने जाते हैं, हमारे संकल्प और पुरुषार्थ से कहीं अधिक जनसहयोग एवं दैवी अनुदान बरसते दिखाई देते हैं।

युगावतार से जुड़े परिजन प्रायः अपनी सफलताओं और सिद्धियों की चर्चा करते हैं, किन्तु यह भूल जाते हैं कि इस सौभाग्य से जुड़े हमारे विशेष दायित्व भी हैं। गुरुदेव-माताजी ने अपने स्नेहानुदानों से हमारे अंतःकरण में एक ज्योति जलाई है, इस आशा और विश्वास के साथ कि हम इसके प्रकाश में अपने को पहचानेंगे, अपनी विशिष्टताओं को समझेंगे और जिस महान उद्देश्य के लिए हमने जन्म लिया है, उसे पूरा करने के लिए तत्पर होंगे। हमारी गुरुसत्ता ने जो दिव्य ज्योति हमारे अंतःकरण में प्रज्वलित की है, हम अपनी तप साधना से उसे जीवंत रखें, प्रखर बनाते चलें, इसी में हमारे शिष्यत्व की सार्थकता है। हमारे जीवन-दीप से भूली, भटकी मानवता को सन्मार्ग की ओर प्रेरित होने का अवसर मिले, इसी में हमारे इस दिव्य जन्म की सफलता है।

जो गुरुदेव ने किया, वही हम करें

100 वर्ष पूर्व दादा गुरुदेव, परम पूज्य गुरुदेव की पूजा की कोठरी में उनके दिव्य जन्म का बोध कराने आए थे। तब गुरुदेव ने स्वयं को पहचाना और अपने जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी तरह से समर्पित हो गए। इसी प्रकार परम पूज्य गुरुदेव भी हमें हमारे जीवन की वास्तविकता का बोध कराते रहे हैं। उनका एक वीडियो संदेश है '**अपने आप को पहचानें**'। इसका सारांश नवम्बर 2025 की अखण्ड ज्योति में 'अपनों से अपनी बात' स्तंभ में प्रकाशित हुआ है। उनमें से कुछ बातों पर ध्यान दीजिए, वे कहते हैं:-

''अपने आप को पहचान लीजिए कि आप सामान्य आदमी हैं नहीं, आप असामान्य हैं और आप सामान्य कर्मों के लिए पैदा नहीं हुए हैं, असामान्य कामों के लिए पैदा हुए हैं। ... उन्होंने (मुझे) दिखाया तो मालूम पड़ा कि हमारा पूर्वजन्मों का कुछ संकलन है, पूर्वजन्मों की कोई सम्पदा हमारे पास है और हम सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं। सामर्थ्यवान व्यक्ति हैं तो हम बड़े काम कर सकते हैं और बड़े काम करने चाहिए। आपसे भी मैं ठीक वही बात कह रहा हूँ। जो पुरानी घटना मेरे साथ बीती है, उन्हीं बातों को कह रहा हूँ।

आप हमारा कहना मानें तो आप नफे में रहेंगे, जैसे कि हम नफे में रहे। जिस तरह से हमारे पास पुराने जन्मों के संस्कार थे और उन संस्कारों के बल पर सफलता पर सफलता मिलती चली गई, आप यदि एक कदम उठायेंगे इसी राह पर, तो आपको भी सफलता पर सफलता मिलती चली जाएगी। ...

आप सो गए मालूम पड़ते हैं, इसलिए मुझे आपको जगाना है। जगाने के लिए मैं प्रार्थना कर रहा हूँ आपसे कि आप अपने को जगा लीजिए। ... इसी स्थिति में बने रहेंगे हमेशा, तो आप विश्वास रखिये कि आप एक ऐसा मौका गँवा देंगे, जैसा कि मौका कभी नहीं आने वाला, कभी नहीं आएगा। ...

आप थोड़ी-सी हिम्मत दिखाएँ, बस इतनी हिम्मत दिखाएँ, जितनी रीछ-बंदरों ने दिखाई थी। आप तो उनसे बड़े हैं। ऐसे मौके पर आपको छोटे लाभों का विचार नहीं करना चाहिए। आपके पास बहुत शक्ति है, इस शक्ति का ठीक इस्तेमाल इस तरह करें और आप सोयें नहीं। ...

यह ऐसा समय है जैसे भारत का संविधान लिखा गया था, उसी तरह से मानव जाति का भविष्य आज लिखा जा रहा है और उस लिखे हुए भाग्य-भविष्य में आपका कुछ योगदान होना चाहिए, मेरा ख्याल है कि आपका योगदान जरूर होगा।''

इतना तो साहस कीजिए

यह समय उलटे को उलटकर सीधा करने का समय है। यह भौतिकतावादी चकाचौंध में भरमाई दुनिया के अंधानुकरण का समय नहीं है, विवेकपूर्वक सत्प्रवृत्तियों को अपनाने का समय है। झूठी शान दिखाने व जीवन की बर्बादी करने का नहीं, महापुरुषों के जीवन का अनुकरण करते हुए फैशन, फिजूलखर्ची से समाज को बचाकर सादगी और सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करने का समय है। समाज में समानता, समरसता को प्रोत्साहित करते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को चरितार्थ करने का समय है। 'मानव मात्र एक समान' के उद्घोष के साथ सबके हित में अपना हित मानने की आवश्यकता है।

वर्तमान समाज को नए हौसले की जरूरत है। आने वाले कल की चिंताओं एवं अनिश्चितताओं से ऊपर उठकर अध्यात्म पथ पर चलते हुए आत्मविश्वास और ईश्वर विश्वास को निरंतर बढ़ाने वाले प्रोत्साहन की समाज को आवश्यकता है, ताकि उनमें सत्य, प्रेम, न्याय के मार्ग पर चलने का साहस बढ़ता रहे। गुरुदेव-माताजी की प्रेरणा और आशीर्वाद से हम सब इस राह पर चले हैं और श्रेष्ठता की ओर अग्रसर हुए हैं। हमारा जीवन निरंतर ज्योतित होता चला गया है। इस दिव्य ज्योति का प्रकाश सारे समाज में, पूरे संसार में छा जाये, यही समय की माँग है।

हम सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार में उदासीन न रहें। यह मीडिया का युग है। अपने आदर्शवादी जीवन के छोटे-छोटे उदाहरणों और सफलता की कहानियों से भी समाज को बदला जा सकता है। अध्यात्ममार्ग पर चलने से, गायत्री उपासना-साधना से जिस प्रकार हमारा जीवन बदला है, उसके उदाहरण समाज को मिलने चाहिए। अच्छे, सकारात्मक समाचारों और छोटी-छोटी रीलों के माध्यम से समाज में सत्प्रवृत्तियों का पुण्य प्रसार होना चाहिए। आत्मप्रशंसा से बचें, लेकिन सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए आदर्शवादी उत्कृष्टता को प्रकाशित करना इस युग की एक साधना है। जहाँ समाज में अवांछनीयताओं की बाढ़ आई है, वहाँ लोगों को सन्मार्ग दिखाना आज का युगधर्म है। पाक्षिक प्रज्ञा अभियान इस कार्य में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। ऐसे सकारात्मक, सृजनात्मक समाचार, संस्मरण, प्रेरक घटनाक्रमों को हमें अवश्य भेजें अथवा उनके विषय में हमें सूचित करें।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहे हैं। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अत: वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोटः सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

संपर्क सूत्र : 9258369725 (Whatsapp)

#SHANTIKUNJ का लोकार्पण समारोह

5 नवम्बर, देव दीपावली के पावन दिन #शांतिकुंज (हैशटैग शांतिकुंज) का समारोहपूर्वक लोकार्पण हुआ। लोकार्पण समारोह देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिसर में नवनिर्मित #SHANTIKUNJ के आकर्षक सेल्फी पॉइण्ट के समक्ष आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का शुभारंभ सम्मानीय अतिथिगण महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेश्वरानंद जी महाराज, हरिद्वार से सांसद श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत, देसंविवि के प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, मुंबई की सामाजिक कार्यकर्त्री श्रीमती रूबल नागी एवं गायत्री विद्यापीठ की प्रबंधिका आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने #शांतिकुंज को विश्व में आध्यात्मिक चेतना के नवजागरण का सशक्त आधार बताया।

स्वामी विश्वेश्वरानंद जी ने 'हैशटैग शांतिकुंज' को अध्यात्म व तकनीक के संगम का सुंदर उदाहरण बताया, जो समाज में नैतिक पुनर्जागरण को गति देगा। उन्होंने सनातन संस्कृति का उद्घोष 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के भाव को जन-जन के विचारों में उतारने का आह्वान किया।

सांसद श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने कहा कि शांतिकुंज सदैव परिवर्तन का केंद्र रहा है, यह पहल परिवर्तन की उस पुनीत परंपरा को डिजिटल रूप देगी।

श्रीमती रूबल नागी ने कहा कि शान्तिकुञ्ज की गतिविधियों के साथ जुड़कर युवाओं को समाज परिवर्तन की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

कार्यक्रम में इटली की डॉ. रोजी के नेतृत्व में 40 योग साधक, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे। गणमान्य अतिथियों ने 'अखण्ड दीपक संदर्शिका' स्मारिका का विमोचन भी किया। डॉ. चिन्मय जी एवं श्रीमती शेफाली जी ने अतिथियों को रुद्राक्ष की माला एवं विश्वविद्यालय का प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

#शांतिकुंज

'हैशटैग शांतिकुंज' सोशल मीडिया के माध्यम से विश्व में आध्यात्मिक चेतना के नवजागरण का आधार बनेगा। इसके माध्यम से शान्तिकुञ्ज, गायत्री मंत्र, युग निर्माण योजना व युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों को एक ही स्थान पर विश्वभर में प्रसारित करना, लोगों के लिए इन्हें जानना और इनके साथ जुड़ना सुविधाजनक होगा।

विश्व में आध्यात्मिक चेतना के नवजागरण का सशक्त आधार है 'हैशटैग शांतिकुंज'। -आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में निर्मित सेल्फी पॉइंट #शांतिकुंज का लोकार्पण कर रहे गणमान्य स्वामी विश्वेश्वरानंद जी, त्रिवेन्द्र सिंह रावत, डॉ. चिन्मय जी, सुश्री रूबल नागी, शेफाली जी, योगेन्द्र गिरि आदि

युग निर्माण सत्संकल्प-15

(..... पृष्ठ 1 से आगे)

सार्वजनिक संस्थाओं में स्वार्थपरता और नेतागिरी लूटने के लिए जिन दुरात्माओं ने अड्डा जमा लिया है, उन्हें दूध में से मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया जाए। धर्म और अध्यात्म का लबादा ओढ़कर जो रंगे सियार अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं, उनकी असलियत चौराहे पर नंगी खड़ी कर दी जाए। स्वच्छ शासन प्रदान करने के लिए राजनैतिक नेता और विधायकों, शासकों और अफसरों को यह सोचने के लिए बाध्य किया जाए कि वे अपने निजी लाभ के लिए नहीं, लोकमंगल के लिए ही शासन-तंत्र का उपयोग करें ।

इस प्रकार के संघर्ष की बहुमुखी प्रचंड प्रक्रिया अगले दिनों युग निर्माण योजना आरंभ करेगी। पग-पग पर अनौचित्य के, अन्याय के साथ लड़ा जाने वाला यह धर्म-युद्ध तभी समाप्त होगा, जब मानवता के आदर्श की विजय पताका सारे विश्व में फहराने लगेगी। •

उ.प्र. में एक करोड़ देव परिवार निर्माण का महान अभियान

विराट नारी उत्कर्ष समारोह, लखीमपुर खीरी से हुआ शुभारंभ

पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी का त्यागमय जीवन हमारा आदर्श है। -आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी

लखीमपुर-खीरी। उत्तर प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश के संयोजन में परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में उत्तर प्रदेश में न्यूनतम एक करोड़ देव परिवार बनाने का महा अभियान आरंभ हुआ। इसका शुभारंभ लखीमपुर खीरी जनपद में 06 से 10 नवंबर 2025 की तिथियों में संपन्न हुए विराट नारी उत्कर्ष समारोह के रूप में हुआ। इसमें प्रांत के 20 से अधिक जनपदों से पहुँचीं एक हजार से अधिक महिलाओं को देव परिवार निर्माण का आवासीय प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से श्रीमती श्यामा राठौड़ की ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली पहुँची थी।

आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी लखीमपुर खीरी में आयोजित नारी उत्कर्ष समारोह को संबोधित करते हुए

उत्तर प्रदेश के प्रांतीय प्रकोष्ठ द्वारा नारी उत्कर्ष के लिए चलाए जा रहे इस क्रांतिकारी अभियान को प्रोत्साहित करने के लिए श्रद्धेया शैल जीजी का प्रतिनिधित्व करते हुए आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी लखीमपुर खीरी पहुँची थीं। लखनऊ से लखीमपुर तक कई स्थानों पर परिजनों ने उनका भव्य स्वागत किया। दीपयज्ञ के अवसर पर दिये गए उनके उद्बोधन ने सभी कार्यकर्त्ताओं को गुरुदेव-माताजी के स्नेह-संवेदना की अनुभूतियाँ कराईं।

आदरणीया शेफाली दीदी ने कहा कि परिवर्तन हृदयों का होना चाहिए। त्याग से ही देवत्व उभरता और निखरता है। माता-पिता का त्याग ही परिवार का आधार होता है। सेवा और त्याग की इसी भावना को विकसित करते हुए हमें घर-घर में देव परिवारों का निर्माण करना है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी का लोकमंगल के लिए समर्पित तप-त्यागमय जीवन हमारा आदर्श है।

समस्त कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के जय प्रकाश वर्मा ने किया। मीडिया प्रभारी अनुराग मौर्य ने बताया कि उत्तर जोन समन्वयक परमानंद द्विवेदी, प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ समन्वयक प्रभाकर सक्सेना, अयोध्या जोन समन्वयक देशबंधु तिवारी, बहराइच उपजोन समन्वयक आर.एस. पाल, जिला समन्वयक रामखेलावन निषाद आदि की मुख्य उपस्थिति में यह समारोह सम्पन्न हुआ।

चारों जोनों को सौंपी मशाल

उत्तर प्रदेश के प्रांतीय प्रकोष्ठ ने न्यूनतम एक करोड़ देव परिवार बनाने का महान अभियान चलाया है। इस क्रम में देव परिवार निर्माण प्रशिक्षण हेतु आदरणीया शेफाली दीदी ने प्रदेश के चारों जोनों को नारी उत्कर्ष संकल्प मशालें सौंपीं। अयोध्या जोन के बलरामपुर जनपद, आंवलखेड़ा जोन के झांसी जनपद, नजीबाबाद जोन के बरेली जनपद और वाराणसी जोन के वाराणसी जनपद के प्रतिनिधियों को नारी उत्कर्ष संकल्प मशाल सौंपी गई।

आदरणीया शेफाली जी बलरामपुर जनपद को नारी उत्कर्ष संकल्प मशाल सौंपते हुए

प्रमुख आकर्षण, विशेष प्रयोग

नारी गौरव मंगल यात्रा : कार्यक्रम के पहले दिन नारी गौरव मंगल यात्रा निकाली गई, जिसके माध्यम से नगर में लगभग 10 कि.मी. का भ्रमण करते हुए नारी शक्ति को नवचेतना के जागरण का संदेश दिया। इस यात्रा में बहिनों की स्कूटी वाहिनी, धर्मध्वजा वाहिनी, कलश वाहिनी, राष्ट्र ध्वज वाहिनी एवं देवी शक्तियों की झांकियाँ शामिल हुईं। सदर विधायक योगेश वर्मा ने कन्या पूजन कर इसका शुभारंभ किया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ : भूपेंद्र पाठक जी के संयोजन में विभिन्न जनपदों की 150 कन्याओं ने सामूहिक नृत्य और नाट्य मंचन के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा उन्मूलन, सोशल मीडिया के दुष्प्रभाव, नारी की गौरव गाथा आदि विषयों पर प्रेरणाप्रद प्रस्तुतियाँ दीं।

घर-घर देव स्थापना अभियान : देव परिवार निर्माण प्रशिक्षण शिविर की प्रतिभागी बहिनों की 70 टोलियाँ बनाई गईं। उन्हें लखीमपुर शहर के विभिन्न मोहल्लों व जिले के विभिन्न गाँवों में भेजा गया। इन टोलियों ने पूर्व में पंजीकृत 500 से अधिक परिवारों में देव स्थापना कराई। प्रत्येक घर में देव स्थापना किट (देव स्थापना चित्र, पीला झंडा, परिवार निर्माण साहित्य सेट, गायत्री परिवार देव परिवार नाम पट्टिका, युग निर्माण सत्संकल्प पत्रक आदि) की स्थापना की गई। यह अभियान अनवरत चलता रहेगा।

देवस्थापना के लिए निकली टोलियाँ

संस्कार महोत्सव : चौथे दिन गुरुदीक्षा सहित विविध संस्कार सम्पन्न कराए गए। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान की प्रदेश समन्वयक डॉ० संगीता सारस्वत ने महिलाओं की कार्यशाला ली। यज्ञ से पूर्व लखनऊ से आए अरुण श्रीवास्तव ने यज्ञ के वैज्ञानिक प्रभाव पर कार्यशाला की।

श्रीराम स्मृति उपवन के अवलोकन से गद्गद हुए जिलाधिकारी

दिल्ली के अन्य पार्कों को भी विकसित करने का दिया प्रस्ताव

गाँधी नगर। दिल्ली

गायत्री परिवार ने अपने हरीतिमा एवं स्वास्थ्य संवर्धन अभियान के अंतर्गत विप्र फाउंडेशन एवं गायत्री परिवार, पूर्वी दिल्ली के संयुक्त प्रयासों से महिला कॉलोनी, गाँधी नगर के एक पार्क को गोद लेकर उसमें पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन की स्थापना की है। नवग्रह वाटिका के नाम से विख्यात् इस उपवन में जड़ी-बूटियों के सुव्यवस्थित रोपण के साथ-साथ एक्यूप्रेशर पथ का निर्माण किया गया है, जिसका बड़ी संख्या में लोगों को लाभ मिल रहा है। वहाँ नित्य योग तथा बाल संस्कारशाला की कक्षाएँ चलाई जाती हैं तथा नशा उन्मूलन के लिए गतिविधियाँ भी संचालित की जाती हैं।

दिनांक 8 नवम्बर को गायत्री परिवार एवं विप्र फाउण्डेशन के गणमान्यों तथा वाटिका के रखरखाव में सहयोगी व्यापारी बंधुओं के आमंत्रण पर शाहदरा जिले के डीएम श्री शैलेन्द्र सिंह स्मृति उपवन के अवलोकन हेतु पधारे। हॉर्टिकल्चर विभाग के असिस्टेंट डायरेक्टर श्री रंजीत गंगवार एवं शाहदरा जिले के एडीएम श्री राजीव रंजन भी उनके साथ थे।

श्रीराम स्मृति उपवन का निरीक्षण करने आए जिलाधिकारी श्री शैलेन्द्र सिंह गायत्री परिवार की बहिनों के साथ

डीएम सहित सभी गणमान्य इस दिव्य उद्यान का अवलोकन कर बहुत प्रभावित एवं आनन्दित हुए। उन्होंने गायत्री परिवार एवं सहयोगी संस्थाओं के परिजनों से क्षेत्र के अन्य पार्कों को भी इसी प्रकार से विकसित करने का आग्रह किया। इसके लिए उन्होंने प्रशासन की ओर से एकमुश्त फंड की व्यवस्था किए जाने का आश्वासन भी दिया। नशा उन्मूलन कार्यक्रमों में भी प्रशासनिक सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया गया।

पूर्वी दिल्ली के समन्वयक श्री सज्जन शर्मा ने डीएम साहब को गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे रचनात्मक कार्यों की जानकारी दी। सम्मानित अतिथियों के द्वारा नवग्रह वाटिका के रख-रखाव में अनवरत रूप से मासिक अनुदान देकर सहयोग करने वाले परिजनों को युग निर्माण सत्संकल्प एवं प्रज्ञा साहित्य प्रदान करके सम्मानित किया गया।

गरीब बेटी के कन्यादान में सहयोग

आरा। बिहार : गायत्री शक्तिपीठ, मौलाबाग की बहिनों ने अपने क्षेत्र की गरीब बेटी के विवाह में सहयोग करते हुए समाजोत्थान के लिए अपनी प्रतिबद्धता का परिचय दिया। इन बहिनों ने चारखंबा गली की एक गरीब कन्या खुशी कुमारी के कन्यादान के लिए 20,000 रुपये नकद एवं 11 साड़ियाँ प्रदान कीं। इस पवित्र कार्य में गायत्री परिवार की श्रीमती रीना सिंह, कुसुम त्रिपाठी, राम सिंगारो देवी, प्रभा सिंह, रेनू मिश्रा इत्यादि बहिनों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा कर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश दिया।

वनवासी उत्थान एवं बाल निर्माण के संकल्प सुदृढ़ हुए

अण्डमान निकोबार द्वीप समूह

दिनांक 25 अक्टूबर को मध्य अण्डमान के रंगत क्षेत्र में आदरणीय चिन्मय पण्ड्या जी के आगमन ने बाल संस्कारशाला के बच्चों एवं उनके संचालकों में व्यापक उत्साह उभरा। प्रमुख संचालिका श्रीमती डी. सत्यावती जी के घर बाल संस्कार शाला के वनवासी बच्चों ने आदरणीय चिन्मय भैया का अत्यंत उल्लसित हृदय से पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। वंदना जी, श्री विजया पुरम से वेंकट जी (जे. ई. ए.पी.डब्ल्यू.डी.), अमित गोयंका जी, अनिल श्रीवास्तव, परिव्राजक राजाराम, युवा बिटिया शिवानी की विशेष उपस्थिति में सभी ने एकजुट होकर, क्षेत्र में वनवासी उत्थान एवं बाल निर्माण के बीजांकुरों को वृक्ष के रूप में परिणत करने का संकल्प लिया। उल्लेखनीय है कि उपरोक्त कार्यकर्त्ताओं के प्रयासों से क्षेत्र में वनवासियों का धर्म परिवर्तन रोकने में गायत्री परिवार को बहुत बड़ी सफलता मिली है।

मुनस्यारी में विशिष्ट साधना शिविर

विशेषज्ञ चिकित्सकों के दल ने साधना के साथ चिकित्सा शिविर लगाया

शान्तिकुञ्ज द्वारा गायत्री चेतना केन्द्र, मुनस्यारी में चलाए जा रहे नियमित साधना शिविरों के बीच दिनांक 26 से 31 अक्टूबर 2025 की तिथियों में एक विशेष सत्र सम्पन्न हुआ। इस शिविर में कुल 31 साधकगण शामिल हुए, जिनमें 6 विशेषज्ञ चिकित्सक, 2 चिकित्सा सहायक तथा एक व्यसनमुक्ति परामर्शदाता परिजन शामिल थे। देवात्मा हिमालय की मनोरम गोद में आत्मोत्थान की विविध साधनाएँ करने के साथ-साथ इस दल ने अपनी विशिष्ट योग्यता का लाभ क्षेत्रीय परिजनों को दिया।

बालिकाओं के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए 24 कम्प्यूटर्स दान देने पर भी विचार-विमर्श हुआ

इस साधना शिवर के साथ गायत्री चेतना केन्द्र पर निःशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर चलाया गया। कुल 292 मरीजों का परीक्षण किया गया और उनकी आवश्यकता के अनुसार निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गईं। 9 कान की मशीनें लगाई गईं तथा 11 लोग व्यसन से मुक्त हुए। डॉ. रमेश ओझा (सर्जन एवं यूरोलॉजिस्ट), डॉ. प्रतुलराज गुप्ता (गेस्ट्रो सर्जन), डॉ. अमिता गुप्ता, लखनऊ (पैथोलॉजिस्ट), डॉ. एस.पी. सिंह बस्ती (सर्जन), डॉ. प्रदीप अग्रवाल रायबरेली (सर्जन), डॉ. सुधाकर सिंह बाल रोग विशेषज्ञ, डॉ. ए.के. सिंह सर्जन ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। चेतना केन्द्र की दिव्यता से अनुप्राणित चिकित्सकों ने पुनः वहाँ आने और ओ.टी. स्तर का मेडिकल कैम्प लगाने का मन बनाया।

दिनांक 30 अक्टूबर 2025 को श्रीमती हीरा देवी भट्ट विवेकानंद इंटर कॉलेज तथा विवेकानंद विद्या मंदिर इंटर कॉलेज में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाये गये।

चिकित्सकों ने शारीरिक स्वास्थ्य लाभ के साथ मानसिक स्वास्थ्य एवं आत्मिक उत्थान के लिए नित्य गायत्री चेतना केन्द्र पर आने एवं जप-ध्यान करने के लिए भी आगंतुक रोगियों को सहमत किया।

गायत्री परिवार, सुल्तानपुर ने गायत्री चेतना केन्द्र मुनस्यारी को ₹151000/- का सामूहिक अंशदान भी दिया। बालिकाओं को कन्या कौशल प्रशिक्षण भी दिया गया। क्षेत्रीय बालिकाओं के भौतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए 24 कंप्यूटर प्रदान करने पर भी चर्चा हुई।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

सरदार पटेल की 150वीं जयंती

युवाओं में किया राष्ट्रवाद का संचार

‘दिया’ छत्तीसगढ़ ने कई जिलों में दीपयज्ञ के साथ मनाया राष्ट्रीय एकता दिवस

दुर्ग में अखण्ड ज्योति एवं प्रज्ञा अभियान का वितरण

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा संगठन ‘दिया छत्तीसगढ़’ द्वारा दिनांक 31 अक्टूबर 2025 को लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल जी की 150वीं जयंती दुर्ग, भिलाई, रायपुर, कोरबा, पेंड्रा, मारवाही गौरेला, बेमेतरा, बलौदाबाजार, बिलासपुर जिलों के विभिन्न दिया मण्डलों द्वारा दीपयज्ञ के माध्यम से मनाई गई। दिया छत्तीसगढ़ के प्रांतीय संयोजक डॉ. पी.एल. साव, श्री ओम प्रकाश बलभद्र, सविता साहू, विजेंद्र यादव, खिलावन पटेल, देव चरण, सरोज राठौर, रोहित बरेठ, नंदिनी पाटनवर, पंकज साय, सौरभ पाटनवर, वेद प्रकाश थवाइत, सुषमा साहू ने इन कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय एकता, अखण्डता के लिए सरदार पटेल के कार्यों और संकल्पों की याद दिलाई। प्रत्येक कार्यक्रम में दिया शाखाओं द्वारा युग निर्माण आन्दोलन के अंतर्गत इन प्रयासों को निरंतर गति देते रहने के संकल्प दोहराए गए।

सेंदरी, बिलासपुर। छत्तीसगढ़ : गायत्री प्रज्ञापीठ सेंदरी में राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर राष्ट्र जागरण संकल्प दीप महायज्ञ का आयोजन हुआ। दिया, बिलासपुर एवं दिया सेंदरी की इस आयोजन में मुख्य भूमिका रही। बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लेकर राष्ट्र निर्माण के प्रति संकल्प व्यक्त किया। इसके माध्यम से एकता, सद्भावना और राष्ट्रप्रेम का संदेश दिया गया। यह कार्यक्रम पूरी तरह से युवाओं के द्वारा निर्देशित एवं संचालित था।

आयोजन का शुभारम्भ गायत्री महामंत्र से हुआ। दीपों की पंक्तियों, अगरबत्ती की मनमोहक सुगन्ध एवं मंत्रध्वनि से पूरा वातावरण अलौकिक आभा से भर उठा। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सरदार पटेल की स्मृति में वृक्षारोपण

भोथापारा, धमतरी। छत्तीसगढ़ : कन्या आश्रमशाला भोथापारा, धमतरी में राष्ट्रीय एकता दिवस एवं अक्षय आँवला नवमी का पावन पर्व मनाते हुए बच्चों को राष्ट्र और प्रकृति के प्रति निष्ठावान रहने की प्रेरणाएँ दीं। शाला में पवित्र मंत्रोच्चारण के साथ बच्चों से देव वृक्ष आँवला एवं प्रकृति देवता का पूजन कराया गया। गायत्री महिला मण्डल की सक्रिय सदस्या एवं शाला प्रभारी श्रीमती देवकी नाग ने बच्चों को पेड़, पौधे एवं हरियाली से धरती का शृंगार करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि पेड़, पौधों से हमें जीवनोपयोगी बहुत-सी वस्तुएँ प्राप्त होती हैं, इसलिए हमें वृक्षारोपण करके उनकी सुरक्षा करनी चाहिए।

राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में सभी बच्चों एवं उपस्थित लोगों ने देश की एकता एवं अखंडता के प्रति निष्ठावान रहने का संकल्प लिया।

छत्तीसगढ़ के स्थापना दिवस पर जनजागरण आदर्श ग्रामोन्मुख कार्यक्रम हुए

ठेकवाडीह, बालोद। छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर 1 नवम्बर 2025 को गायत्री परिवार द्वारा ग्राम ठेकवाडीह में व्यसन मुक्ति जागरूकता रैली निकाली गई। गाँव के वरिष्ठों, प्रमुखों, युवाओं एवं बच्चों ने रैली में भाग लेते हुए पूरे गाँव को नशामुक्ति की प्रेरणा दी। छत्तीसगढ़ स्थापना दिवस के कार्यक्रमों में युवाओं का उत्साह दर्शनीय था। नशामुक्ति रैली के अलावा प्रातःकाल स्वच्छता अभियान चलाया गया और रात को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से साधना, पर्यावरण संरक्षण, नारी सम्मान जैसी अनेक सृजनात्मक प्रेरणाएँ दी गईं। इसमें जिला समन्वयक श्री बी.एस. अठनागर सहित श्री धनसिंह गंजीर, परिव्राजक श्री बहुर सिंह साहू, श्री दिलीप कुमार निर्मलकर एवं श्री हरिराम साहू जी का विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

ठेकवाडीह में गायत्री परिवार ने निकाली व्यसनमुक्ति जनजागरण यात्रा

दिवंगत देवात्मा को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री नाहर सिन्हा, कुरुद, धमतरी। छत्तीसगढ़ : वर्ष 2009 से एक परिव्राजक के रूप में मिशन को सतत सेवाएँ प्रदान कर रहे ग्राम मेंडरका, कुरूद, निवासी श्री नाहर सिन्हा दिनांक 3 नवम्बर 2025 को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हुए।

जन्मशताब्दी वर्ष 2026 की विशेष उपलब्धि

नागदा (मध्य प्रदेश) तथा आगरा (उत्तर प्रदेश) में 11000-11000 लोगों तक पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने के संकल्प उभरे

मधुबनी, बिहार में श्री पवन कुमार सुरेका जी बनायेंगे 2400 सदस्य

उज्जैन जिले के नागदा शहर में दिनांक 1 से 5 जनवरी 2026 की तिथियों में राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन हो रहा है। इसके प्रयाज में अखण्ड ज्योति एवं पाक्षिक प्रज्ञा अभियान ने बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित महायज्ञ की संयोजिका श्रीमती ममता बैरागी जी ने युग चेतना के इस प्रवाह को 10 गुना गति देने का निश्चय किया और नागदा शहर तथा आसपास के 100 से अधिक गाँवों में कुल 11000 घरों में वर्षभर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का निश्चय किया है।

आगरा शहर के समर्पित एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री मदन मोहन शर्मा जी के द्वारा भी अपने सहयोगियों के साथ इसी प्रकार 11000 पाठकों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प लिया है। वे पहले से ही अखण्ड ज्योति एवं युग निर्माण योजना की 250 प्रतियों के साथ लोगों में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान वितरित कर रहे हैं। परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में इतनी बड़ी संख्या में प्रज्ञा अभियान लोगों तक पहुँचाकर वे उनके मनों में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के विचारों का स्मारक विनिर्मित करना चाहते हैं।

मधुबनी, बिहार के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री पवन सुरेका जी कई वर्षों से बिहार और नेपाल में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान लोगों तक पहुँचा रहे हैं। जन्मशताब्दी वर्ष में उन्होंने अपनी सक्रियता को कई गुना करते हुए 2400 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाने का संकल्प लिया है।

प्रज्ञा अभियान के वितरकों को भेजे जा रहे हैं प्रशस्ति पत्र ‘दिव्य अखण्ड ज्योति के प्रकाश पुंज’

वर्ष 2025 में पूरे देश में परिजनों ने आत्मीयता विस्तार और जनसंपर्क अभियान को बढ़ाने में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की महत्ता को विशेष रूप से अनुभव किया है, जिससे पाक्षिक की सदस्यता का कई गुना विस्तार हुआ है। परिजनों की इस भावना का सम्मान करते हुए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने प्रज्ञा अभियान के ऐसे सभी वितरकों को, जो 50 या उससे अधिक लोगों तक नियमित रूप से पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पहुँचा रहे हैं, प्रशस्ति पत्र भेजने का निर्णय लिया है।

विशेष ध्यान दीजिए :
जिन्हें शान्तिकुञ्ज से 50 या उससे अधिक संख्या में प्रज्ञा अभियान भेजे जा रहे हैं, उन्हें तो यह पत्र भेजे ही जायेंगे, लेकिन जो अपने क्षेत्र में अधिक संख्या में पाक्षिक मँगाते हैं और अन्य लोगों के माध्यम से उन्हें वितरित कराते हैं, ऐसे 50 से अधिक पाक्षिक वितरित करने वाले परिजनों की सूची भी प्रज्ञा अभियान को भेज दें, ताकि उन्हें भी सम्मान पत्र दिया जा सके।

नए सदस्यों को भी :
जो परिजन जन्मशताब्दी वर्ष-2026 में 50 या उससे अधिक संख्या में प्रज्ञा अभियान मँगा रहे हैं, वे भी यथाशीघ्र सदस्यता ग्रहण कर लें और उसकी जानकारी प्रज्ञा अभियान के संपादन विभाग को दे दें। वसंत पंचमी से पूर्व सदस्यता ग्रहण करने वाले परिजनों को भी यह प्रशस्ति पत्र भेजे जाने की योजना है।

निवेदक : संपादक, प्रज्ञा अभियान

प्रज्ञा अभियान कार्यालय : 9258369725 (व्हॉट्सएप)

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान संबंधी विशेष सुविधा

(केवल हिन्दी भाषा में प्रज्ञा अभियान के लिए)

अवसर का लाभ उठायें, जन्मशताब्दी वर्ष में परम पूज्य गुरुदेव के विचार और चेतना को जन-जन तक पहुँचायें

मात्र ₹1000/- में मिलेगी 25 प्रज्ञा अभियान की वार्षिक सदस्यता

परम पूज्य गुरुदेव के प्रति समर्पित प्राणवान परिजनों की आकांक्षा और प्रयास है कि जन्मशताब्दी वर्ष में हर भावनाशील श्रद्धालु और विचारशील प्रबुद्ध व्यक्ति तक गुरुदेव के विचार पहुँच जायें। ऐसे ही प्रयासों के अंतर्गत ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) विगत आठ वर्षों से प्रज्ञा अभियान को लोगों तक पहुँचाने में विशेष सहयोग प्रदान कर रही है। इस योजना के अंतर्गत प्रज्ञा अभियान के 25 या उससे अधिक सदस्य बनने वालों को वार्षिक सदस्यता का आधा मूल्य (25 सदस्यों के लिए मात्र ₹1000/-) शान्तिकुञ्ज के खाते में सीधे जमा कराना होगा और इसकी सूचना शान्तिकुञ्ज के प्रज्ञा अभियान विभाग को (व्हॉट्सएप 9258369725 अथवा ईमेल pragyaabhiyan@awgp.org) और ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज के संयोजक श्री देवव्रत साहा राय (व्हॉट्सएप 9415638196) को देनी होगी। इस सूचना के आधार पर शेष आधी राशि ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज द्वारा शान्तिकुञ्ज में जमा कराई जायेगी।

शान्तिकुञ्ज के बैंक खाते का विवरण पृष्ठ क्रमांक 3 पर नीचे दिया गया है।

यह सुविधा मात्र ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज के विशेष संस्करण के लिए है। म.प्र. या राजस्थान संस्करण के सदस्यों के लिए यह सुविधा नहीं है।

गायत्री परिवार के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले सिंधी संत साईं चाण्डूराम साहिब को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

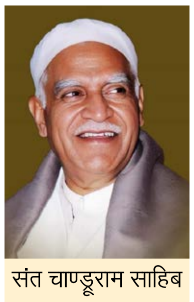
संत चाण्डूराम साहिब

साईं मोहनलाल जी एवं साईं हरीश लाल जी तर्पण करते हुए शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने कराया मरणोत्तर संस्कार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : लखनऊ के प्रसिद्ध सिन्धी संत साईं चाण्डूराम साहिब 15 अक्टूबर की दोपहर ब्रह्मलीन हुए। दिनांक 25 अक्टूबर को उनके दोनों सुपुत्र साईं मोहनलाल जी एवं साईं हरीश लाल जी एवं स्नेही स्वजन अस्थि विसर्जन एवं तर्पण हेतु वीआईपी घाट, हरिद्वार आये थे। यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से श्री जयराम मोटलानी, श्री गणेश पवार और श्री किरण पटेल द्वारा संपन्न किया गया। इस अवसर पर हरिद्वार के संत समाज, लखनऊ और कई क्षेत्रों के 350 से अधिक परिजनों ने संत जी को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

ब्रह्मलीन संत साईं चाण्डूराम साहिब गायत्री परिवार का बहुत सम्मान करते रहे। प्रतिवर्ष उनके यहाँ रामनवमी व अन्य विशिष्ट कार्यक्रमों में सामूहिक आदर्श विवाह एवं सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन होता है, जो शान्तिकुञ्ज से भेजी जाने वाली टोली के माध्यम से सम्पन्न कराया जाता है। उनके आश्रम शिव शांति संत आसूदाराम आश्रम, लखनऊ में गायत्री परिवार द्वारा आयोजित कई बड़े कार्यक्रमों को श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने संबोधित किया है।

‘न वा उ एतन्प्रियसे न रिष्यसि’ - आत्मा न कभी मरती है, न कभी उसकी क्षति होती है। - यजु. 23/16

जन्मशताब्दी वर्ष की संगठनात्मक हलचल

प्रांतीय युवा चिंतन शिविर अनुयाज कार्यशाला

भीकनगाँव, खरगोन। मध्य प्रदेश
भोपाल के प्रांतीय युवा चिंतन शिविर में प्रदेश के हर जिले ने भावी सक्रियता के संकल्प लिए। ओंकारेश्वर उपजोन ने अविलम्ब इनके क्रियान्वयन की कार्ययोजना हेतु खरगोन जिले के भीकनगाँव में अनुयाज कार्यशाला का आयोजन किया। इसमें उपजोन के अंतर्गत के चारों जिलों के 11-11 अभियान प्रभारी उपस्थित हुए। प्रमुख निर्धारण निम्नानुसार हैंः-

ओंकारेश्वर उपजोन की अनुयाज योजनाओं पर मार्गदर्शन देते श्री मेवालाल पाटीदार जी

प्रत्येक तहसील के 11-11 गाँवों का चयन कर चलायेंगे रचनात्मक कार्यक्रम

सक्रियता की दिशाधारा : सभी जिलों में अविलम्ब व्यसन मुक्ति, बालसंस्कार शाला, युवा जागृति अभियान, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, ग्राम तीर्थ योजना , मंत्रलेखन अभियान, कन्या कौशल अभियानों पर कार्य आरंभ होगा।

प्रशिक्षण : जिला स्तर पर प्रशिक्षण आयोजित कर 11 अभियानों के प्रशिक्षक तैयार किये जाएँगे। यह कार्य एक माह में सम्पन्न हो जाएगा।

एक गाँव-एक अभियान : प्रत्येक तहसील द्वारा 11-11 गाँवों का चयन कर हर गाँव में एक-एक आन्दोलन को प्रमुखता से, प्रभावशाली ढंग से चलाया जाएगा।

संगठनात्मक जिम्मेदारी : चारों जिलों में एक दिवसीय चिंतन बैठक होंगी, हर तहसील को उसके संकल्प और जिम्मेदारियों से अवगत कराया जाएगा। उपजोन स्तर पर पाँच भाइयों और पाँच बहिनों की फॉलोअप टीम होगी। प्रत्येक 4 माह में एक बार उपजोन स्तरीय समीक्षा बैठक की जायेगी।

उपजोन झाँसी के पाँचों जिलों में प्रयाज गोष्ठियाँ

झाँसी। उत्तर प्रदेश : परम वंदनीया माता जी एवं सिद्ध ज्योति दिव्य अखण्ड दीप के शताब्दी महोत्सव के प्रयाज कार्यक्रमों की समीक्षा तथा भावी सक्रियता की योजनाओं पर चर्चा के लिए उपज़ोन झाँसी के पाँच जिलों-जालौन, हमीरपुर, महोबा, ललितपुर एवं झाँसी में गोष्ठियाँ आयोजित हुईं। जन्मभूमि आँवलखेड़ा ज़ोन के समन्वयक श्री जे.एस. कुशवाह ने इन्हें मुख्य रूप से संबोधित किया। सभी गोष्ठियों में बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी।

गाँव-गाँव साधना अभियान को पहुँचाने और ज्योति कलश रथयात्रा को सफल बनाने पर हुई चर्चा

श्री कुशवाहा जी ने जन्म शताब्दी के निमित्त साधना अभियान तथा युग साहित्य के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को गाँव-गाँव तक पहुँचाने संबंधी दिशा-निर्देश दिये। प्रस्तावित ज्योति कलश रथयात्रा को उपज़ोन झाँसी के प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान एवं प्रत्येक न्याय पंचायत तक पहुँचाने की योजना की समीक्षा की गई। जोन सहायक समन्वयक-विजय पाल सिंह बघेल, उपज़ोन समन्वयक श्री आशाराम कुशवाहा, उपज़ोन सहसमन्वयक आदित्य श्रीवास्तव द्वारा संगठनात्मक विस्तार पर चर्चा की गई।

जन्मशताब्दी के लिए अद्भुत समर्पण और उत्साह

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ : 5 नवम्बर 2025 को बिलासपुर में प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के मार्गदर्शन में एक दिवसीय जन्मशताब्दी संभागीय युवा कार्यशाला का आयोजन हुआ। जन्मशताब्दी की कार्ययोजनाओं पर मंथन के लिए पूरे प्रदेश में आयोजित की जा रही संभाग स्तरीय कार्यशालाओं के आयोजन के क्रम में यह पाँचवा कार्यक्रम था। इसमें आठ जिले-बिलासपुर, कोरबा, जांजगीर, चांपा, सक्ती, जीपीएम सारंगढ़, रायगढ़ एवं मुंगेली से आए लगभग 2000 कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। इतनी बड़ी संख्या में कार्यकर्त्ताओं का शामिल होना मिशन के प्रति उनके समर्पण और उत्साह को दर्शाता है।

संभागीय युवा कार्यशाला

कार्यक्रम में प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ के संयोजक श्री ओमप्रकाश राठौर, सहसंयोजकगण सर्वश्री चम्पेश्वर साहू, डी.आर. चौहान, सुरेन्द्र गुप्ता एवं डॉ. कुन्ती साहू का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। श्री धनसाय बैगा (उपजोन समन्वयक),श्री बी.आर.धुर्वे, श्री एस.पी.चौहान. एवं श्री योगेश साहू आदि परिजनों का तन, मन, धन से सहयोग प्राप्त हुआ।

देश-विदेश में नवचेतना जगाती ज्योति कलश यात्राएँ

शेक्सपीयर की जन्मभूमि में ज्योतिकलश का भावपूर्ण स्वागत

स्ट्रैटफोर्ड-अपॉन-एवन। इंग्लैंड
महान लेखक शेक्सपीयर की जन्मभूमि स्ट्रैटफोर्ड-अपॉन-एवन में देवोत्थान एकादशी के दिन दिव्य ज्योति कलश का आगमन हुआ। तत्पश्चात् उसे 13 से भी अधिक सौभाग्यशाली घरों में अत्यंत श्रद्धा-सम्मानपूर्वक ले जाया गया। ज्योति कलश के सान्निध्य में अनेक परिजनों को दिव्य शक्तियों की उपस्थिति की अनुभूतियाँ हुईं। एक श्रद्धालु परिजन ने अपने आनन्द को अभिव्यक्त करते हुए कहा, 'जैसे ही दिव्य कलश घर में प्रविष्ट हुआ, ऐसा महसूस हुआ मानो दिव्यता का प्रकाश अवतरित होकर हृदय एवं घर को प्रकाशित एवं पवित्र कर रहा हो तथा शांति, समृद्धि एवं आध्यात्मिक जागरण का आशीर्वाद प्रदान कर रहा हो'।

श्री सान्निध्य गुप्ता जी के घर में पहुँचा दिव्य ज्योति कलश

ज्योति कलश यात्रा के संयोजन में श्री सान्निध्य गुप्ता जी का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। सभी स्थानों पर जन्म शताब्दी आयोजनों एवं ज्योति कलश यात्रा के उद्देश्य की जानकारी प्रदान की गई।

ज्योति कलश रथ यात्रा बनी आत्मचेतना के जागरण की यात्रा

रथ के भ्रमण के साथ चलाया घर-घर देवस्थापना, स्टिकर और साधना अभियान

मेरठ। उत्तर प्रदेश : मेरठ जिले में सुश्री मृदुला जी के निर्देशन में दिव्य ज्योति कलश रथ यात्रा अत्यंत प्रेरणादायी एवं प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुई। उन्होंने बताया कि यह यात्रा मात्र एक कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि जन-जन से आत्मजागरण का आह्वान था। यात्रा गाँव-गाँव, घर-घर पहुँची और जन-जन में आध्यात्मिक चेतना का संचार करती रही।

मेरठ में दिव्य ज्योति कलश यात्रा के साथ घर-घर जाकर अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ एवं यात्रा से संबंधित पत्रक वितरित किए गए। लगभग 1000 घरों में देवस्थापनाएँ कराई गईं। घर-घर दरवाजों और दीवारों पर सद्वाक्य के स्टिकर चिपकाए गए। अपने अनेक परिजनों ने ज्योति कलश रथ के दीप से

ज्योति प्रज्वलित कर उसे अपनी पूजा स्थली पर देव दीपावली तक अखण्ड रखा। उसके सान्निध्य में तरह-तरह के पूजा, प्रार्थना, अनुष्ठान आदि क्रम सम्पन्न किए।

बीकानेर में राष्ट्र जागरण ज्योति कलश यात्रा का भव्य स्वागत

बीकानेर। राजस्थान : बीकानेर में राष्ट्र जागरण रथ यात्रा के पहुँचने से पूरे क्षेत्र में असीम उत्साह की लहर छा गई। जगह-जगह गायत्री परिवार के परिजनों एवं विशिष्ट नागरिकों द्वारा भव्य स्वागत एवं पूजन किया जा रहा है। जहाँ-जहाँ रथ पहुँचता है, वहाँ मिशन के गीतों से वातावरण भक्तिमय और ऊर्जावान हो उठता है। लोग रथ में स्थापित शक्ति कलश एवं अखंड दीप के दर्शन-पूजन कर भावविभोर हो जाते हैं। जहाँ भी रथ पहुँचता है, वहाँ ऐसा प्रतीत होता है मानो गुरुदेव और माताजी स्वयं साक्षात् पधार गए हों।

बीकानेर में ज्योति कलश रथ के सान्निध्य में विभिन्न विद्यालयों में भी विशेष कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ तथा सायंकाल दीपयज्ञ के माध्यम से लोगों को

गुरूजी के जीवन-दर्शन, अखंड दीपक की विशेषता तथा वंदनीया माताजी के आदर्शों की जानकारी दी जा रही है।

विद्यालय में शिक्षा सेमीनार

बच्चों को जीवनोपयोगी प्रेरणाएँ दीं

मंडीदीप, रायसेन। मध्य प्रदेश
नव विस्तार गायत्री चेतना केंद्र मंडीदीप औद्योगिक क्षेत्र भोपाल के द्वारा मंडीदीप के गिरधर पब्लिक स्कूल में शिक्षा सेमिनार का आयोजन किया गया। गायत्री प्रज्ञा पीठ बरखेड़ा के तत्त्वावधान में आयोजित इस सेमिनार में कक्षा 6 से 12वीं तक के विद्यार्थियों की भागीदारी रही। गिरधर पब्लिक स्कूल के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री निलेश पांडे जी और प्राचार्या श्रीमती सरिता हजारे और चेतना केंद्र प्रभारी यतीश गुप्ता जी की उपस्थिति में विद्यार्थियों को बहुआयामी शिक्षाएँ प्रदान की गईं।

गायत्री परिवार की ओर से मुकेश साहू, रुचि श्रीवास्तव, प्रियंका विश्वकर्मा, आरुषि सिन्हा, अनिल कछावा आदि ने विद्यार्थियों का अलग-अलग विषयों पर मार्गदर्शन किया। बच्चों को गायत्री मंत्र का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक महत्त्व बताया गया। समय प्रबंधन, बाल संस्कारशाला, जीवन में सेवा-साधना, नशे के दुष्परिणाम जैसे विषयों पर बड़ी उपयोगी जानकारी एवं प्रेरणाएँ प्राप्त हुईं।

धीरज मनी जी ने बच्चों को ऐसी ही सत्प्रेरणाओं और गायत्री परिवार की गतिविधियों से जुड़े रहने के लिए प्रज्ञा पाक्षिक पढ़ने की प्रेरणा दी। बच्चों में प्रज्ञा अभियान वितरित किए गए। श्री जयप्रकाश जी ने सभी शिक्षकों को मंत्र दुपट्टा और अखंड ज्योति पत्रिका प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में विशेष सहयोग के लिए सभी परिजनों ने रचना सिंह जी का आभार व्यक्त किया।

मोहवश प्रियजनों से अत्यधिक प्रेम करने से यश चला जाता है। - ऋषि वाल्मीकि

आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में युगचेतना का विस्तार एवं जन्मशताब्दी का उल्लास

भव्य स्वागत, जन-जन में आत्मीयता का विस्तार

दक्षिण भारतीय लोक परंपरा के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत करते परिजन एवं श्रद्धालु

अखण्ड ज्योति परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की प्रखर प्राण चेतना का जीवंत स्वरूप है। इस प्रखर प्राण ऊर्जा के संवाहक, अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 31 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना के प्रवास पर थे। इस प्रवास में अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्म की शताब्दी की तैयारियों के उल्लास के बीच आंध्र प्रदेश के गायत्री शक्तिपीठ, नाराकोडरू में तथा कृष्णा जिले के पोंडुगुला में नए केन्द्रों के लोकार्पण, भूमिपूजन के कार्यक्रम सम्पन्न किए। उन्होंने कृष्णा जिले के भीमावरम और हैदराबाद, तमिलनाडु में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञों में पहुँचकर हजारों लोगों को युग संदेश दिया।

विजयवाड़ा में भव्य स्वागत : प्रथम दिन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का परिजनों ने विजयवाड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर भव्य स्वागत किया। वे विजयवाड़ा में अनेक भावनाशील कार्यकर्त्ताओं एवं गणमान्यों पर युगतीर्थ के आशीर्वाद-अनुदानों की वर्षा करने उनके घर भी गए, देवस्थापनाएँ कीं तथा उन्हें जन्म शताब्दी वर्ष के ऐतिहासिक कार्यक्रम में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया।

गायत्री चेतना केन्द्र में सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा का लोकार्पण

गायत्री चेतना केन्द्र, नाराकोडरू में उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

नाराकोडरू, गुण्टूर। आंध्र प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ, नाराकोडरू दक्षिण भारत में गायत्री उपासना एवं ध्यान साधना का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बनकर उभर रहा है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने वहाँ पहुँचकर नवनिर्मित गुरु-स्मारक 'सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा', ध्यान कक्ष एवं गायत्री स्तम्भ का लोकार्पण किया। शक्तिपीठ पर माँ गायत्री के साथ सप्त ऋषियों की उपासना, ध्यान के लिए विशिष्ट भवन का निर्माण किया गया है, जिसका अवलोकन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने किया।

चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि 'सजल श्रद्धा, प्रखर प्रज्ञा' की प्राण प्रतिष्ठा और लोकार्पण के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव और पूज्य माताजी का यहाँ आगमन हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रखर ज्ञान और अटूट आस्था ही गुरुदेव-माताजी के सच्चे स्मारक हैं, वही हमारे लिए भगवान हैं। मनुष्य के जीवन में श्रद्धा तब आती है, जब वह अपने आप को भगवान को समर्पित कर देता है। जिस दिन भक्त अहंकार खो देता है, वह भगवान का हो जाता है। उन्होंने सभी को अपनी शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि यह दिन हमारी श्रद्धा, आस्था और समर्पण के जागरण का दिन हो और परम पूज्य गुरुदेव का प्रकाश हम सभी में प्रकाशित हो, ऐसी प्रार्थना हम सबको करनी चाहिए।

श्रीकृष्ण गायत्री धाम में हो रहा है गायत्री मंदिर का निर्माण

पोंडुगुला, कृष्णा। आंध्र प्रदेश

पोंडुगुला में कृष्णा नदी के तट पर श्रीकृष्ण गायत्री धाम में भव्य गायत्री मंदिर का निर्माण हो रहा है। उल्लेखनीय है कि यह वह श्रीकृष्ण तीर्थ है, जहाँ कृष्णा नदी से स्वतः ही प्रकट भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति प्रतिष्ठित है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने देवोत्थान एकादशी के दिन वहाँ पहुँचकर गायत्री मंदिर निर्माण के लिए भूमिपूजन सम्पन्न किया।

आद. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पोंडुगुला में भूमिपूजन एवं शिलान्यास करते हुए

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने देवोत्थान एकादशी के दिन श्रीकृष्ण गायत्री तीर्थ में गायत्री मंदिर के भूमिपूजन को विशेष दैवीय आशीर्वाद बताया। उन्होंने अर्जुन का उदाहरण देते हुए श्रद्धालुओं को युग निर्माण योजना के अंतर्गत पूरे समर्पण भाव से भगवान के कार्य के लिए समर्पित होने और अपने क्षेत्र को गायत्रीमय कर देने की प्रेरणा दी।

युग निर्माणी आस्थाओं का परिचय दिया, मरणोपरांत देहदान किया

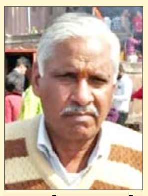

स्व. श्री दयाल जी

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार मुलताई, सिरसावाडी के निवासी गायत्री परिवार के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री दयाल चौहान जी का दिनांक 12 नवम्बर को देहावसान हो गया। उन्होंने मरणोपरांत देहदान का संकल्प लिया था, जिसे उनके पुत्र हेमंत और योगेश तथा परिवारी जनों ने पूरा किया।

स्व. दयाल चौहान जी एक शिक्षक थे, जिन्होंने जीवन के 40 वर्ष मिशन की प्रेरणाओं के अनुरूप विद्यार्थियों का भविष्य सँवारने में लगाए। वे विगत 45 वर्षों से गायत्री शक्तिपीठ मुलताई से जुड़कर मिशन का कार्य करते हुए समाज सेवा कर रहे थे। मरणोपरांत देहदान कर उन्होंने जीवन के अंतिम क्षणों में भी सेवाधर्म निभाया।

भीमावरम और हैदराबाद में सम्पन्न 108 कुण्डीय यज्ञों में संदेश

मन, भाव और विचारों की शुद्धि के लिए गायत्री उपासना अनिवार्य है

भीमावरम के महायज्ञ में कार्यकर्त्ताओं की श्रद्धा-भावना का अभिसिंचन

भीमावरम, कृष्णा। आंध्र प्रदेश

आदरणीय डॉ. चिन्मय पड्या जी ने भीमावरम में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचकर श्रद्धालुओं को नवयुग के अवतरण में युगशक्ति गायत्री की भूमिका बताई तथा युगयज्ञ के प्राणवान होता बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने वर्तमान समय में गायत्री उपासना की अनिवार्यता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गायत्री मंत्र अंतः जागृति का मंत्र है। यह पापनाशक मंत्र है। शुद्ध मन से गायत्री मंत्र का जप करने से मानव जीवन पापों से मुक्त हो जाता है।

श्रद्धालु श्रोतागण डॉ. चिन्मय जी के संदेश से बहुत प्रभावित हुए। कार्यक्रम में युग निर्माण योजना को गति देने की शपथ दिलाई गई।

जब सद्गुरु मिलते हैं तो जीवन आमूलचूल बदल जाता है।

- आद. डॉ. चिन्मय जी

हैदराबाद। तेलंगाना

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी हैदराबाद में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में पहुँचे। उन्होंने दीपयज्ञ के पावन अवसर पर श्रद्धालुओं को संबोधित किया। इस अवसर पर पूज्य चिन्ना जीयर स्वामी जी की विशेष उपस्थिति रही, आशीर्वाद मिले।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने अपने संदेश में कहा कि जब सद्गुरु जीवन में आते हैं, तो जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन हो जाता है। तब नरेंद्र विवेकानंद बनकर राष्ट्र जागरण हेतु गुरुदेव द्वारा बताए गए मार्ग पर चल पड़ते हैं। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं को आत्मवत् सर्वभूतेषु, मातृवत् परदारेशु और परद्रव्येषु लोष्ठवत के सूत्रों को अपनाते हुए जीवन को ही यज्ञमय बनाने की प्रेरणाएँ दीं। सभी याजकों को जन्म शताब्दी समारोह में भागदारी हेतु आमंत्रित किया गया।

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री श्याम प्रताप सिंह राघव

स्व. श्री श्यामप्रताप सिंह

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के अत्यंत आत्मीय स्वजनों में रहे ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के व्यवस्थापक श्री श्याम प्रताप सिंह राघव का दिनांक 8 नवम्बर 2025 को देहावसान हो गया। वे सन् 1970 से परम पूज्य गुरुदेव-माताजी के संपर्क में आए और तभी से मिशन के कार्यों में सक्रिय रहे। पूज्य गुरुदेव के आह्वान पर वे धौलपुर में सहकारिता विभाग में अधिकारी के पद से नौकरी छोड़ कर सन् 1978 में सपरिवार शान्तिकुञ्ज आ गए थे।

स्व. श्री श्याम प्रताप सिंह राघव जी ने ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान के निर्माण कार्य से लेकर जीवन पर्यंत उसके व्यवस्थापक के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। अखण्ड ज्योति के सम्पादन में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के साथ मिल कर अत्यंत उल्लेखनीय सहयोग किया। प्रज्ञा पुराण की रचना में भी उनका सहयोग रहा।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी सहित समस्त शान्तिकुञ्ज, ब्रह्मवर्चस एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार उनके निधन पर उन्हें भाव सुमन समर्पित किये। उन्हें गुरुसत्ता के श्रीचरणों में स्थान मिले, धर्मपत्नी श्रीमती सुमन राघव, बेटे नरेन्द्र राघव, बेटी रेणु सहित समस्त परिवरीजनों को इस वियोग को सहने की शक्ति मिले, ऐसी प्रार्थना की।

प्रज्ञा अभियान संबंधी अत्यावश्यक सूचना

विगत कुछ माह से भारतीय डाक विभाग में बदले गए नियमों के अनुसार रजिस्टर्ड डाक सेवा बंद कर दी गई है। अब साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्र-पत्रिकाओं को केवल साधारण डाक से भी भेजे जाने की सुविधा डाक विभाग में उपलब्ध है। यह नया नियम केवल गायत्री परिवार के लिए ही नहीं, बल्कि देश की सभी पत्र-पत्रिकाओं पर लागू होता है।

डाक विभाग के नए नियमों की बाध्यता के कारण रजिस्टर्ड डाक से प्रज्ञा अभियान भेजने की व्यवस्था भी अब बंद हो गई है। अतः परिजनों से अनुरोध है कि अपने स्थानीय पोस्ट ऑफिस और पोस्टमैन से निरंतर संपर्क बनाए रखें, ताकि प्रज्ञा अभियान के पैकेट समय पर आप तक पहुँचते रहें। पाठकों हो रही इस असुविधा के लिए हमें खेद है।

निवेदक : व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

इन्द्रियजन्य वासनाएँ उपभोग से शान्त नहीं होतीं, बढ़ती हैं, जैसे आग में घृत की आहुति। - महर्षि वेदव्यास

असम और अरुणाचल प्रदेश में जन्मशताब्दी वर्ष की प्रखर चेतना का विस्तार

जन्मशताब्दी वर्ष में पूरे देश में करोड़ों परिजनों और श्रद्धालुओं के अंतस् में नवयुग सृजन की उमंगें हिलोरें ले रही हैं। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के राज्य असम एवं अरुणाचल प्रदेश में भी कार्यकर्त्ताओं में भरपूर उत्साह है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, करोड़ों लोगों के आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिनांक 8 एवं 9 नवम्बर को असम और अरुणाचल के प्रवास पर पहुँचे, वहाँ आयोजित कई कार्यक्रमों में भाग लेते हुए देव संस्कृति के दिव्य आलोक को जन-जन के मनों में प्रतिष्ठित करने की प्रेरणाएँ दीं। सभी कार्यक्रमों में पूर्वोत्तर जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री एम.के. शर्मा भी आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के साथ रहे।

डिब्रूगढ़ की प्रथम गोष्ठी में परिजनों और प्रबुद्धजनों से संवाद

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी तेजू में आयोजित दीप महायज्ञ के श्रोताओं को संबोधित करते हुए

आध्यात्मिक चेतना के विस्तार हेतु प्रबुद्धजनों की प्रतिबद्धता

प्रबुद्ध वर्ग संगोष्ठी

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के प्रवास का शुभारंभ डिब्रूगढ़ एयरपोर्ट पर आगमन के साथ हुआ। दोनों ही राज्यों के कार्यकर्त्ताओं ने वहाँ उनका अत्यंत आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया।

डिब्रूगढ़ में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की प्रथम गोष्ठी हुई। इसमें अनेक डॉक्टरों, इंजीनियरों, शिक्षाविदों, समाजसेवियों एवं उच्च प्रतिष्ठित पत्रकारों के साथ आत्मीय संवाद हुआ। परिजनों ने क्षेत्र में चल रहे युग निर्माण, युवा जागरण एवं संस्कार विस्तार के विविध अभियानों की जानकारी साझा की तथा समाज में आध्यात्मिक चेतना के प्रसार के लिए भागीदारी के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने परिजनों को अपने जीवन से पूज्य गुरुदेव के आदर्शों का जीवंत उदाहरण बन कर लोकमंगल की दिशा में अग्रसर रहने की प्रेरणा दी। सभी के द्वारा 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' के उद्घोष के साथ नवनिर्माण का संकल्प दोहराया गया।

तिनसुकिया और सुनपुरा में गायत्री शक्तिपीठों के दर्शन

सेवा, साधना और स्वाध्याय से जीवन के उत्थान का मंत्र दिया

डिब्रूगढ़ से प्रस्थान कर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी पहले तिनसुकिया और फिर सुनपुरा में स्थित गायत्री शक्तिपीठों में गए। परिजनों के लिए उनका आगमन घर के द्वार पर आई गंगाजी के समान था। परिजनों ने उनका पारंपरिक रीति से स्वागत किया। तत्पश्चात् डॉ. चिन्मय जी ने माँ गायत्री एवं गुरुदेव-माताजी के पावन स्मारकों पर अपनी श्रद्धांजलि-पुष्पांजलि अर्पित की। अपने हृदयस्पर्शी दिव्य वचनों से युग निर्माण आन्दोलन के लिए पूरे मनोयोग से समर्पित परिजनों की श्रद्धा-भावना का पोषण किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि हर शक्तिपीठ उस शक्ति का प्रतीक है जो मनुष्य को पशुता से देवत्व की ओर ले जाती है। सेवा, साधना और स्वाध्याय जीवन को देवत्व की ओर अग्रसर करने के अचूक साधन हैं। जो इन्हें जीवन का अंग बना लेते हैं, उनमें युग परिवर्तन की सहज प्रेरणाएँ उभरती हैं। ऐसे प्राणवान परिजनों के सामूहिक प्रयासों से ही समाज बदलेगा और परम पूज्य गुरुदेव का सतयुगी संकल्प पूरा होगा।

राष्ट्रीय नवचेतना जागरण 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

यज्ञ आत्मशोधन एवं विश्व कल्याण का विज्ञान है।

— आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

तेजू। अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल प्रदेश के तेजू में नवचेतना जागरण गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। दीपयज्ञ के पावन अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की उपस्थिति एवं उनके प्रेरक वचनों ने इस महायज्ञ की गरिमा बढ़ा दी। श्रद्धालु श्रोताओं को उन्होंने यज्ञ का ज्ञान-विज्ञान समझाते हुए केवल आहुतियाँ देने तक सीमित न रहते हुए जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए प्रेरित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा, ''यज्ञ केवल अग्नि नहीं है, यह आत्मशोधन और विश्व कल्याण का विज्ञान है। यज्ञ की हर आहुति भावनाओं को शुद्ध करने और भीतर निहित देवत्व को उभारने की ओर बढ़ाया गया सत्कर्म है। यज्ञभाव के साथ जैसे-जैसे भीतर की नकारात्मकता जलती जाती है, जीवन में दिव्यता का प्रकाश फैलता है।''

आद. डॉ. चिन्मय जी परिजनों को प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मानित करते हुए

डॉ. चिन्मय जी ने परम पूज्य गुरुदेव के दिए उद्घोष 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा' को जीवन-मंत्र बनाने की प्रेरणा दी। पूरी यज्ञशाला इस उद्घोष से गूँज उठी। एकता, प्रेम और प्रकाश का संदेश पूरे वातावरण को आलोकित करता रहा। इस अवसर पर लोहित जिले के भाजपा अध्यक्ष श्री गमसो बिलाई और उपायुक्त श्री केसांग निग्रुप दामो जी सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अग्निघाट चाय बागान क्षेत्र में नवचेतना जागरण

जीवन का सार संग्रह में नहीं, बल्कि वितरण में है।

— आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

गुवाहाटी। असम : आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी गुवाहाटी के पवित्र अग्निघाट चाय बागान क्षेत्र में आयोजित राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में युगतीर्थ की प्राण चेतना की स्नेहवर्षा करने पहुँचे थे। सैकड़ों श्रद्धालुओं और नागरिकों ने भक्तिभाव से इस यज्ञ में भाग लिया। वेदमंत्रों की गूँज, आहुतियों की सुगंध और समर्पण की भावना से पूरा परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत होता रहा।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने यज्ञ की पूर्णाहुति से पूर्व 'यज्ञ पिता, गायत्री माता' विषय से अपना संदेश दिया। उन्होंने कहा, ''जीवन का सार संग्रह में नहीं, बल्कि वितरण में है। जो बोया वही काटा जाता है; जो बाँटा जाता है, वही वापस आता है। अपना हृदय विशाल करो, संग्रह करना नहीं, बाँटना सीखो। जो मिला है उसे आगे नहीं दोगे, तो कैसे पाओगे? देने की भावना ही त्याग है और यही जीवन का सबसे बड़ा धर्म है। यही त्याग की भावना युग निर्माण योजना की नींव है। यज्ञ की भावना स्वार्थ के स्थान पर त्याग और भोग के स्थान पर सहयोग का प्रकाश फैलाती है।

इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का अत्यंत भावभरा सम्मान किया गया। आदिवासी बहिनों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुत किया गया।

अग्निमुनि मंदिर में दर्शन-वंदन

महायज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अग्निमुनि मंदिर में वंदना एवं दर्शन हेतु पहुँचे, वहाँ जप, ध्यान किया और वहाँ स्थित पवित्र यज्ञकुंड के दर्शन भी किए।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में मनाई गई उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती

16 विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों ने भाग लिया

उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती के उपलक्ष्य में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 3 एवं 4 नवम्बर को दो दिवसीय विश्वविद्यालय स्तरीय एकल एवं समूह नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। राज्य के 16 विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। प्रतिभागियों की मनमोहक प्रस्तुतियों से मंच हर पल जीवंत बना रहा। इन प्रस्तुतियों में उत्तराखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की झलक देखने को मिली।

> राज्य स्थापना दिवस की रजत जयंती के उपलक्ष्य में देव संस्कृति विश्वविद्यालय को एकल एवं समूह नृत्य प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखंड द्वारा प्रदान की गई थी, जिसे विवि. ने बड़ी कुशलता के साथ पूरा करते हुए प्रतिभागियों को प्रगतिशील विचार और प्रेरणाओं से लाभान्वित होने का अवसर प्रदान किया।

प्रतियोगिता का शुभारंभ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति, युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीप प्रज्वलन कर किया। एकल नृत्य प्रतियोगिता का समापन डॉ. देवेंद्र भसीन, उपाध्यक्ष, उच्च शिक्षा उन्नयन समिति की उपस्थिति में हुआ। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए और कहा कि नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रखने का एक सशक्त माध्यम है। इस अवसर पर डॉ. ममता ड्यूडी नैथानी, उप निदेशक, उच्च शिक्षा विभाग, उत्तराखंड भी उपस्थित रहीं। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ दीं।

उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति को उकेरती मनमोहक प्रस्तुतियाँ और विजेताओं को सम्मानित करते प्रति कुलपति जी

अथाह उत्साह के साथ हरिद्वार में हो रही हैं विराट जन्मशताब्दी समारोह की तैयारियाँ

यह सौभाग्य की त्रिवेणी का अलभ्य अवसर है। - डॉ. चिन्मय जी

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी के निर्देशन और मार्गदर्शन में शान्तिकुञ्ज द्वारा 20 से 23 जनवरी 2026 की तिथियों में हरिद्वार में अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी के जन्म का शताब्दी समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस समारोह में परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी संकल्पों को साकार करने में प्राणपण से सक्रिय देश-विदेश से आने वाले लगभग 30 से 40 हजार समयदानी, स्वयंसेवक पावन गुरुसत्ता को अपनी संकल्प श्रद्धाञ्जलि समर्पित करेंगे। दिनांक 12 नवंबर 2025 से इस विराट समारोह की तैयारियाँ प्रारंभ हो गयीं। लगभग डेढ़ किलोमीटर की परिधि के क्षेत्र में यह विराट कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

यह कार्यक्रम हरिद्वार के कनखल क्षेत्र में गंगा की गोद में स्थिति बैरागी द्वीप में आयोजित हो रहा है। 12 नवंबर से आयोजन स्थल पर जंगली झाड़-झंखाड़ की सफाई, समतलीकरण आदि कार्य प्रारंभ हो गए हैं। लगभग 2000 शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता और शिविरार्थी भाई-बहिन इस कार्य के लिए प्रतिदिन समयदान-श्रमदान कर रहे हैं।

पुण्य लाभ का अलभ्य अवसर

प्रथम दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों परिजनों के आत्मीय आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने समारोह स्थल पर पहुँचकर स्वच्छता-श्रमदान में भाग लिया। उन्होंने सेवाकार्यों में जुटे समस्त परिजनों का उत्साहवर्धन करते हुए जन्मशताब्दी समारोह को सौभाग्य की त्रिवेणी का अलभ्य अवसर बताया, जिसमें युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की साधना के सौ वर्ष, अखण्ड दीप की शताब्दी तथा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी की जन्मशती एक साथ मनाई जाएगी।

कार्य निरीक्षण एवं परिजनों के उत्साहवर्धन के लिए पहुँचे डॉ. चिन्मय जी एवं शेफाली जीजी

असमंजस में समय न गँवायें

दूसरे दिन महिला मण्डल, शान्तिकुञ्ज की प्रमुख श्रीमती शैफाली पण्ड्या जी अपनी बहिनों की टोली के साथ श्रमदान में उपस्थित थीं। उन्होंने कहा कि यह हमारे श्रद्धा और विश्वास की अग्निपरीक्षा का समय है। परिवर्तन की इस वेला में किसी को भी असमंजस में समय नहीं गँवाना चाहिए। हमें पूरे उत्साह के साथ नवयुग के निर्माण में जुट जाना है।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, जन्मशताब्दी समारोह समन्वयक श्री श्यामबिहारी दुबे जी सहित समस्त वरिष्ठ-कनिष्ठ कार्यकर्त्ता प्रतिदिन सेवा-श्रमदान कार्यों में उपस्थित होकर सीधे नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं।

विशेष अनुरोध-आह्वान

जन्मशताब्दी समारोह मिशन में संगठन और सक्रियता की दृष्टि से अग्रणी जिम्मेदारियाँ सँभाल रहे समर्पित एवं भावनाशील कार्यकर्ताओं/समयदानियों का विराट सम्मेलन है। उन पर आगामी पाँच वर्ष की कार्ययोजनाओं के क्रियान्वयन में बड़ी भूमिका निभाने की जिम्मेदारी होगी।

परम पूज्य गुरुदेव ने युग परिवर्तन में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए समाज का नेतृत्व कर रही विभूतियों का विशेष रूप से आह्वान किया है। इस सम्मेलन का उद्देश्य धर्मतंत्र, राजतंत्र, कला, संस्कृति, शिक्षा, उद्योग आदि से जुड़ी विशिष्ट विभूतियों को परम पूज्य गुरुदेव के चिंतन एवं उनकी दिव्य चेतना से जोड़कर उन्हें युग निर्माण आन्दोलन में विशिष्ट भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना भी है।

उपरोक्त दोनों ही प्रकार के प्रतिभागियों का चयन शान्तिकुञ्ज के जोन कार्यालयों के माध्यम से किया जा रहा है। परिजनों से निवेदन है कि गायत्री परिवार के प्रति सद्भाव रखने वाली अपने क्षेत्र की विशिष्ट विभूतियों की जानकारी शान्तिकुञ्ज में अपने-अपने जोन समन्वयकों को शीघ्रता से दे दें, ताकि उन्हें आमंत्रित करने और उनके लिए उचित व्यवस्था करने का कार्य समय पर किया जा सके।

- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

राष्ट्रीय परिव्राजक गरिमा शिविर

मिशन की सबसे अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्त्ता- परिव्राजकों में नई ऊर्जा का संचार हुआ

जन्मशताब्दी समारोह-2026 से पूर्व शान्तिकुञ्ज ने देश के विभिन्न शक्तिपीठों एवं प्रज्ञा केन्द्रों में सेवाएँ प्रदान कर रहे परिव्राजकों के पुनर्बोध एवं समय के साथ बढ़ती जिम्मेदारियों का अहसास कराने के लिए, राष्ट्रीय परिव्राजक गरिमा शिविरों के दो शिविर आयोजित किए। दूसरे शिविर का समापन 16 नवम्बर को हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी सहित शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें संबोधित किया। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने परिव्राजकों को मिशन के सबसे अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्त्ता बताया। उन्होंने कहा कि परिव्राजकों की सेवाओं के माध्यम से सुसंस्कृत समाज और उज्वल भविष्य का निर्माण संभव है।

13 से 15 अक्टूबर की तिथियों में आयोजित प्रथम शिविर एवं 13 से 16 नवम्बर की तिथियों में आयोजित द्वितीय शिविर में 200-200 परिव्राजक भाई-बहिनों की भागीदारी रही। जन्मशताब्दी वर्ष के परिप्रेक्ष्य में उन्हें उनकी विशेष जिम्मेदारियों का बोध कराया गया। शक्तिपीठ पर सेवा और युग चेतना विस्तार के अनेक कार्यक्रमों की चर्चा हुई एवं प्रशिक्षण दिया गया। चार दिवसीय प्रशिक्षण के बाद सभी भरपूर ऊर्जा से भरे और गुरुदेव-माताजी की आकांक्षाओं पर खरे उतरने के लिए उत्साहित थे। विदाई से पूर्व सभी ने डॉ. चिन्मय जी द्वारा बताई गई आशा-अपेक्षाओं को पूर्ण करने का संकल्प लिया और जन्मशताब्दी वर्ष को अपनी उत्कृष्ट सेवा व समर्पण से सफल बनाने का निश्चय किया।

ये विशिष्ट शिविर देशभर में सक्रिय परिव्राजकों के पंजीयन, उनके सुनियोजन की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण थे। परिव्राजकों ने समय-समय पर प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देते रहने का आग्रह किया। श्रद्धेया जीजी से मिलकर एवं विदाई की वेला में ऋषियुग्म के स्मारकों को नमन करते हुए सभी भावविभोर थे। शिविर संचालन शक्तिपीठ प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज ने किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय समाचार

माननीय श्री धर्मेन्द्र प्रधान आए

भारत सरकार में शिक्षा मंत्री माननीय श्री धर्मेंद्र प्रधान जी दिनांक 11 नवम्बर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पधारे। प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मंगल तिलक कर उनका भावभरा स्वागत किया। तत्पश्चात् दोनों के बीच विश्वविद्यालय की मूल्य आधारित शिक्षा, योग विज्ञान एवं भारतीय ज्ञान परंपरा पर विस्तृत चर्चा हुई। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने विश्वविद्यालय की नवीन पहलों, शोध गतिविधियों, विश्व स्तरीय शैक्षणिक सहयोग एवं युवाओं के विकास हेतु चलाए जा रहे कार्यक्रमों से उन्हें अवगत कराया।

माननीय शिक्षा मंत्री जी को सम्मानित करते प्रति कुलपति माननीय डॉ. चिन्मय जी, साथ में स्थानीय विधायक श्री मदन कौशिक जी

माननीय मंत्री जी ने देसंविवि की शिक्षण पद्धति में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में नैतिकता एवं सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के समावेश के लिए देसंविवि द्वारा लीक से हटकर किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय की शिक्षा योजनाएँ भारत की नई शिक्षा नीति की मूल भावना को और अधिक सुदृढ़ करती हैं।

माननीय प्रति कुलपति जी ने माननीय शिक्षा मंत्री जी को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित युग साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। इस अवसर पर हरिद्वार के विधायक माननीय श्री मदन कौशिक जी भी उनके साथ उपस्थित रहे।

आयुर्वेद के अध्ययन और विभिन्न देशों में विस्तार के लिए

इक्वाडोर का प्रतिनिधि मंडल आया

विभिन्न देशों में आयुर्वेद का प्रचार-विस्तार कर रहा डिवाइन वैल्यूज स्कूल, इक्वाडोर का 18 सदस्यीय दल 26 अक्टूबर से 3 नवंबर तक देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के प्रवास पर आया। दल ने यहाँ आयुर्वेद, पादप औषधि, यज्ञोपैथी, मर्म चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा और अन्य भारतीय वैदिक ज्ञान प्रणालियों का अध्ययन किया। विवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान और उसके वैश्विक विस्तार के लिए, शान्तिकुञ्ज, देसंविवि द्वारा किए जा रहे कार्यों से संबंधित उनकी जिज्ञासाओं पर विस्तार से चर्चा हुई।

सर्व योग इंटरनेशनल, इटली के प्रतिनिधि मण्डल ने यज्ञ और योग का अध्ययन किया

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के योग प्रमाणन बोर्ड से मान्यता प्राप्त सर्व योग इंटरनेशनल, इटली की संस्थापक और अध्यक्ष डॉ. एंटोनिएटा रोजी के नेतृत्व में 44 सदस्यीय दल देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के प्रवास पर आया। आध्यात्मिक जीवन मूल्यों को आधुनिक शिक्षा में समाविष्ट करने के विश्वविद्यालय के दृष्टिकोण एवं कार्यक्रमों का अध्ययन किया तथा माननीय प्रति कुलपति जी के साथ चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल ने यज्ञ एवं योग पर एक प्रस्तुति दी। दल परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की प्रेरणा से चल रहे आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार के आंदोलनों से बहुत प्रभावित हुआ।

राष्ट्रीय लघु वीडियो प्रतियोगिता में विजेता रहीं गौरी दीक्षित व नन्दिनी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार की एम.ए. (पत्रकारिता एवं जनसंचार) की छात्रा गौरी दीक्षित एवं नन्दिनी ने आई.टी. एम. विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अंतर-विश्वविद्यालय लघु वीडियो प्रतियोगिता 2025 में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। दोनों छात्रों द्वारा निर्मित वृत्तचित्र फिल्म को राष्ट्रीय स्तर पर तीसरा स्थान मिला।

स्वास्तिका ने जीती शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता

देसंविवि की प्रतिभाशाली छात्रा स्वास्तिका जायसवाल ने उत्तराखण्ड के 25वें स्थापना दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड राज्य के लगभग 16 विश्वविद्यालयों के 250 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। स्वास्तिका को उसकी उत्कृष्टम् प्रस्तुति के लिए ट्रॉफी, प्रमाण पत्र एवं 21,000 रुपये की नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया गया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक-** प्रमोद शर्मा। **पता :-** शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725 (व्हॉट्सएप)
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.11.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26